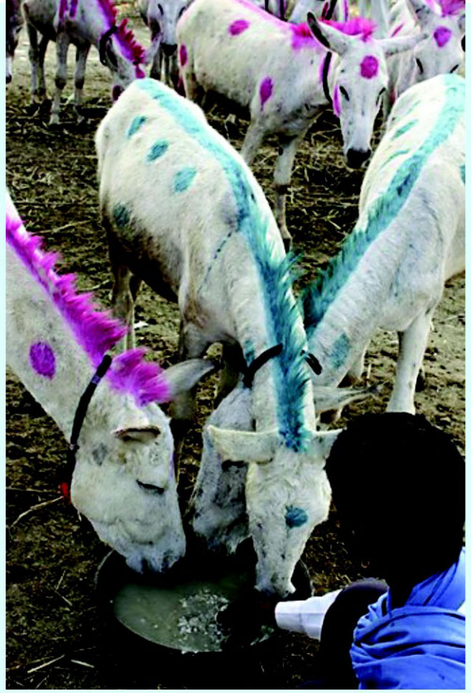

नवम्बर 2008 के वाउथा मेले में 18 हज़ार से ज़्यादा गधे आए।

प्रस्तुतिः गौरव

गधों का मेला

फोन भोपाल से आया था। एक दोस्त का। "और कहाँ हो?" जैसा कि वह हर बार पूछता है।

मैंने कहा, "यहीं, उज्जैन में, और कहाँ होऊँगा।"

"अच्छा, यह बताओ, उज्जैन के गधों के मेले के बारे में तो तुम्हें पता होगा न।" उसने पूछा।

मैंने कहा, "हाँ, बस दो दिन बाद लगने वाला है।"

"तुम तो इसमें जाओगे ही?" कहकर उसने ठहाका लगाया। मैंने भी हँसते हुए कहा, "हाँ, पर तुम आ जाते तो मेले की रौनक और बढ़ जाती।" हँसी-मज़ाक कुछ देर चला। बातों-बातों में बात निकली कि क्यों न गधों के मेले के बारे में चकमक के पाठकों को भी बताएँ। मैं थोड़ा झिझका क्योंकि मेले में घूमना, मज़े करना अलग बात होती है और उस पर लिखना और बात होती है। खैर, मेले में घूमकर और कुछ इधर-उधर से पढ़कर मैंने जो जाना वो तुमसे बाँटता हूँ...

गधों का मेला उज्जैन के अलावा और भी कई जगह लगता है। जैसे अहमदाबाद से कोई 50 किलोमीटर दूर वाउथा में, जयपुर से 25 किलोमीटर दूर लूनियावास में और चित्रकूट (मध्यप्रदेश) में भी। और मज़े की बात यह कि इन तीनों मेलों को एशिया का सबसे बड़ा गधों का मेला कहा जाता है।

उज्जैन का मेला पिछले डेढ़ सौ सालों से हर साल कार्तिक (अक्टूबर-नवम्बर) माह की पूर्णिमा को क्षिप्रा नदी के किनारे भरता आया है। तीन दिन तक चलने वाले इस मेले में दूर-दूर से लोग भाग लेने आते हैं। इस बार गुजरात-राजस्थान और उत्तरप्रदेश से गधों के कई व्यापारी आए थे। हज़ारों गधे बिकने-खरीदे जाने के लिए आते हैं। खरीददार-बेचने वालों के अलावा बड़ी संख्या में लोग इस अदभुत मेले को देखने आते हैं। यहाँ आए गधों की सजधज देखते ही बनती है। उनको सुन्दर और आकर्षक दिखाने के लिए रंगों से उन पर तरह-तरह के डिज़ाइन बना दिए जाते हैं। कभी-कभी तो उनके गले और कान भी लाल, गुलाबी, नीले या हरे रंग दिए जाते हैं। वाउथा मेले में तो गधों के मालिक और खरीददार भी रंग-बिरंगे परम्परागत कपड़ों और साफों में खूब फब रहे होते हैं। वाउथा का मेला भी कार्तिक महीने में लगता है। इस जगह पर सात छोटी नदियाँ साबरमती नदी में मिलती हैं। पाँच दिन चलने वाले इस मेले में गधों के अलावा और भी कई चीज़ों की बिक्री-खरीदी होती है।

गधों के सभी मेलों में जो बात एक-सी दिखी वो है गधों के नाम। जगह कोई भी हो हरेक में गधों के नामों के लिए पहली पसन्द फिल्मी सितारों और राजनेताओं के नाम होते हैं। राजस्थान के मेले में तो मिस्टर और मिसेज़ गधा भी चुने जाते हैं। 500 सालों से भरने वाले लूनियावास मेले में गधों की दौड़ और नृत्य प्रतियोगिताएँ भी होती हैं। इसके अलावा एक कवि सम्मेलन भी होता है जिसमें गधों पर लिखी रचनाएँ ही पढ़ी जाती हैं।

चित्रकूट का गधा मेला मन्दाकिनी नदी के किनारे हर साल पाँच दिनों के लिए भरता है। कहते हैं कि 300 साल पहले मुगल बादशाह औरंगज़ेब ने इस मेले की शुरुआत की थी।

खरीददार गधे में दो चीज़ें देखता है। एक तो वह कितना तन्दुरुस्त है, दूसरे, उसके दाँत कितने हैं। अगर गधे के दो दाँत ही आए हैं तो समझो वह तीन साल से ज़्यादा का नहीं है। और जिसके तीन दाँत आए हैं वह चार साल का। यानी कम दाँत, कम उम्र, बेहतर गधा।

आमतौर पर गधों का इस्तेमाल धोबी, ईंट-भट्टी वाले और कुम्हार करते हैं। ढुलाई के लिए गधे अच्छे माने जाते हैं। हालाँकि हमारे दूसरे पारम्परिक धँधों की तरह ही कुम्हारों-धोबियों के कामों पर भी बुरा असर पड़ा है। प्लास्टिक के बढ़ते चलन से मिट्टी के बर्तनों की माँग कम हो गई है। इससे गधों की माँग भी कम हुई है। इसके अलावा चारे की कमी तथा उसके दामों में ीनी

उज्जैन के गर्दभराज मेले में राजा नाम के गधे के दाँत देखता एक व्यापारी। (फोटोः प्रकाश हथवल्ले)

उछाल भी आया है। इससे गधा पालना महँगा सौदा हो गया है। ढुलाई के लिए ट्रैक्टर आदि मशीनी चीज़ों के चलन ने भी गधे को कम उपयोगी बना दिया है। इसका असर गधों के मेले पर पड़ा है। उज्जैन मेले में एक व्यापारी ने बताया कि एक वक्त यहाँ कई-कई हज़ार गधे बिकने आते थे। और गधे की कीमत पचास हज़ार रुपए तक जा पहुँचती थी। इस बार यहाँ महज़ ढाई हज़ार गधे आए। सबसे महँगे गधे की बोली लगी सिर्फ 12000 रुपए। 300 रुपए में क्या-क्या खरीद सकते हो? इस बार एक खरीददार ने महज़ 300 रुपए में एक गधा खरीदा!

पर वाउथा मेले में आए कुछ लोगों का यह भी मानना है कि आज भी अगर थोड़ी मात्रा में माल ढुलाई करनी है तो गधों से सस्ता कुछ नहीं। गधे वहाँ भी चले जाते हैं जहाँ ट्रैक्टर नहीं पहुँच सकता। जैसे, उथले तालाब, खड्ड आदि में। यहाँ पिछले साल सबसे महँगा गधा 15 हज़ार में बिका। लूनियावास में तो सबसे ज़्यादा या सबसे अच्छी नस्ल के गधे लाने वालों को पुरस्कार भी दिया जाता है। यहाँ ज़्यादातर काठियावाड़ी और मारवाड़ी नस्लों के गधे लाए जाते हैं। मारवाड़ी नस्ल महँगी मानी जाती है। गधों की माँग के कम होते जाने से यहाँ पिछले कुछ सालों से घोड़े भी लाए जा रहे हैं।

कहते हैं कि गधे गर्मियों में सेहतमन्द हो जाते हैं और बारिशों में दुबले। बारिशों में तो हर तरफ घास ही घास होती है। तो फिर वे दुबले क्यों हो जाते हैं? ऐसा सचमुच होता है यह तो पता नहीं। बारिशों में कुम्हार और धोबियों का काम ज़रा कम रहता है। काम कम होगा तो आय भी कम होगी। हो सकता है आय में कमी का असर गधे के चारे पर भी पड़ता हो। वैसे इस सिलसिले में एक चुटकुला प्रचलित है – गर्मियों में कम घास को देख गधा सोचता है कि उसने इतनी घास चर ली है कि आसपास घास बची ही नहीं। और इस खुशी में वह मोटा हो जाता है। बारिशों में हर तरफ घास देखकर गधा सोचता है कि इतनी सारी घास खड़ी है यानी उसने कुछ नहीं खाया। इस दुख में वह दुबला हो जाता है। चकमक

मोहम्मद उमर

तुम भी बनाओ

बचपन में मैं और मेरे दोस्त बेकार पड़ी चीज़ों से तमाम तरह के खिलौने आदि बनाते थे। एक खाली पेन को देखकर आज फिर से खिलौना बनाने का मन किया। फिर सोचा क्यों ना इस खिलौने को तुम्हारे साथ मिलकर बनाएँ। इसे बनाने के लिए तुम्हें चाहिए एक बिना रिफिल का पेन, दो मोती और सूती धागे की एक लच्छी।

सबसे पहले पेन को आगे-पीछे से खोल लो। पेन का जो हिस्सा तुम्हारे पास है, उसे हम पेन का पाइप कहेंगे। इस पाइप में दो फिट लम्बा धागा पिरो लो। और धागे के दोनों सिरों पर मोती बाँध लो।

इस पाइप को मुट्ठी में सीधा पकड़कर अपने हाथ को इस तरह घुमाओ कि ऊपर की ओर बँधा मोती गोल-गोल घूमने लगे। क्या हुआ? लगता है, कुछ कमी रह गई।

तो चलो नीचे वाले मोती के साथ कोई थोड़ी वज़नदार चीज़ जैसे- पेन बाँध लो।
अब की बार घुमाने पर ऊपर वाला मोती धीरे-धीरे घूमने लगेगा और उसका घेरा बड़ा होने लगेगा। साथ ही नीचे वाला मोती भी ऊपर की ओर उठने लगेगा। जब तुम तेज़ी से अपना हाथ घुमाओगे तो नीचे का मोती ऊपर उठकर पाइप के निचले सिरे से सट जाएगा। अब ज़रा घुमाने की गति कम करके देखो। क्या हुआ? चकमक

चित्रः जितेन्द्र ठाकुर